अबु और बड़ी हवा

शान्ती कृष्णास्वामी
चित्राँकनः वंदना बिष्ट

यह किताब

....

की है

इस किताब के प्रकाशन में सहायता के लिए कथा

कॉगनिज़ेंट फाउण्डेशन,

चेन्नई की आभारी है।

v/;kid@v/;kfidkvks ds fy,

cMs mnns'; Üks[kyk – इस श्रृंखला की पुस्तकों में कहानियों द्वारा बच्चों को अपने वातावरण, जीवन और भविष्य के प्रति सजग एवं सक्रिय होने की प्रेरणा दी जा रही है।

vcq vkj cMh gok सिखाती है लड़कियों की शिक्षा और अपने देश के बारे में जानने का महत्व। बच्चों को अपने आस–पास के वातावरण के बारे में जानने के लिए बढ़ावा दें। भारत का मानचित्र दिखाएँ और राजधानियों के बारे में बताएँ। परिवार के सदस्यों के नामों का अभ्यास कराएँ जैसे – बहन, भाई आदि।

अबु और बड़ी हवा

शान्ती कृष्णास्वामी
चित्रॉंकनः वंदना बिष्ट

कथा

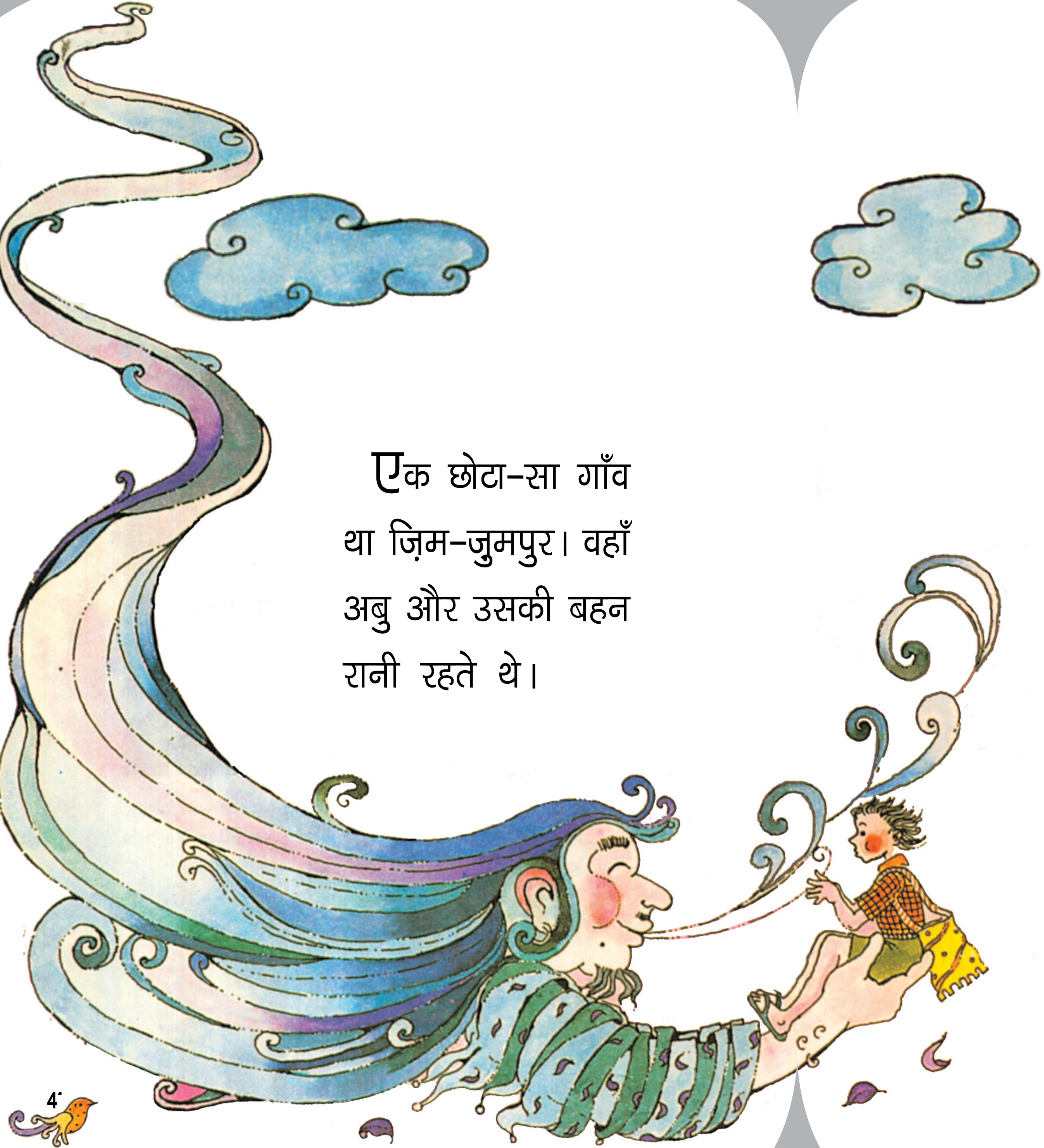

एक छोटा-सा गाँव था ज़िम-जुमपुर। वहाँ अबु और उसकी बहन रानी रहते थे।

एक दिन अबु स्कूल जा रहा था। न जाने कहाँ से बड़ी हवा आई और अबु को उड़ा ले गई, सात समुद्रों और ग्यारह पर्वतों के पार।

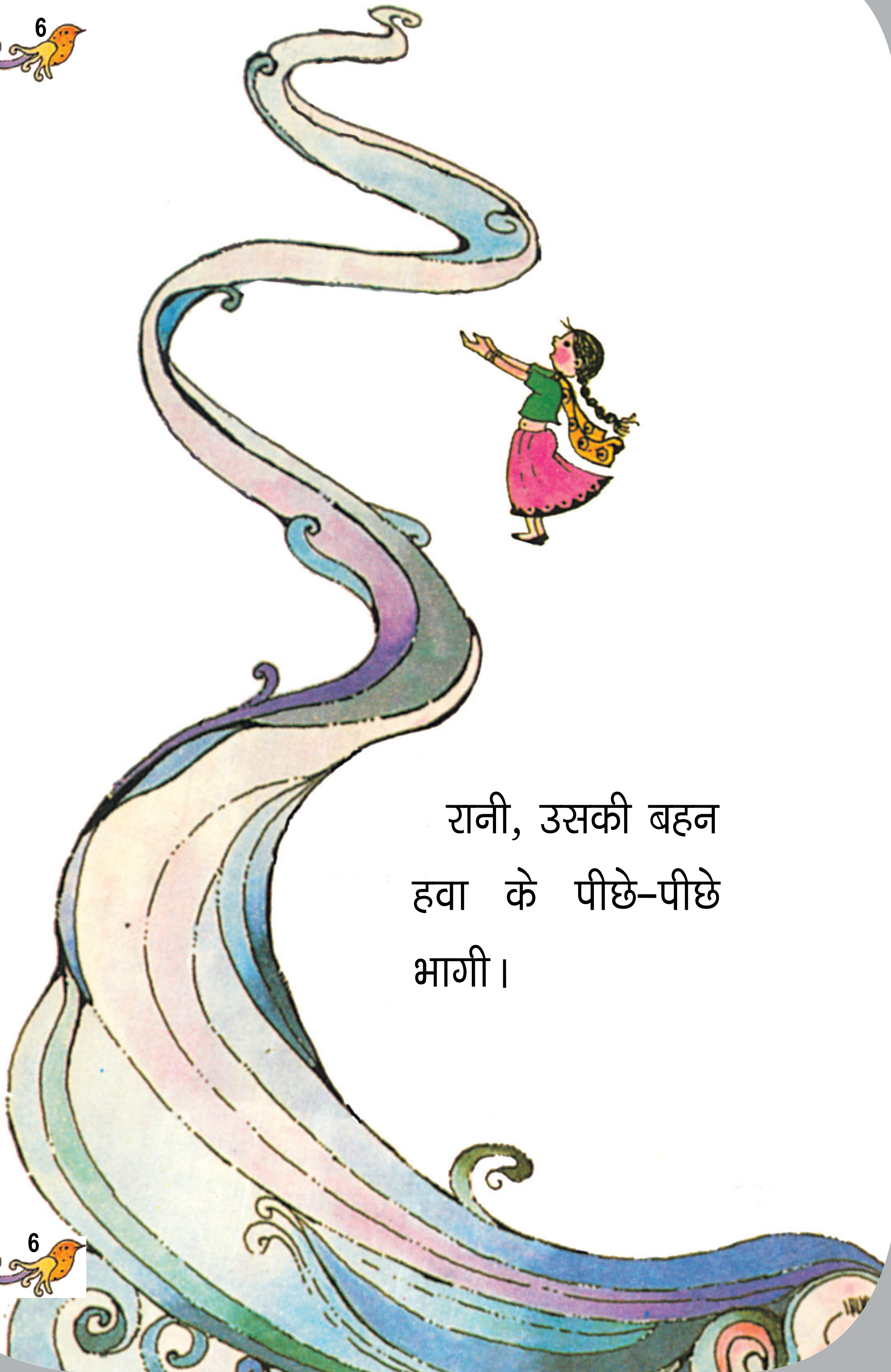

रानी, उसकी बहन
हवा के पीछे-पीछे
भागी।

तभी उसे नीम का एक
बड़ा-सा पेड़ मिला।

“नीम! नीम! बड़ी हवा मेरे भाई को चुराकर ले गई है। उसे ढूँढने में मेरी मदद करो न,” रानी ने नीम के पेड़ से कहा।

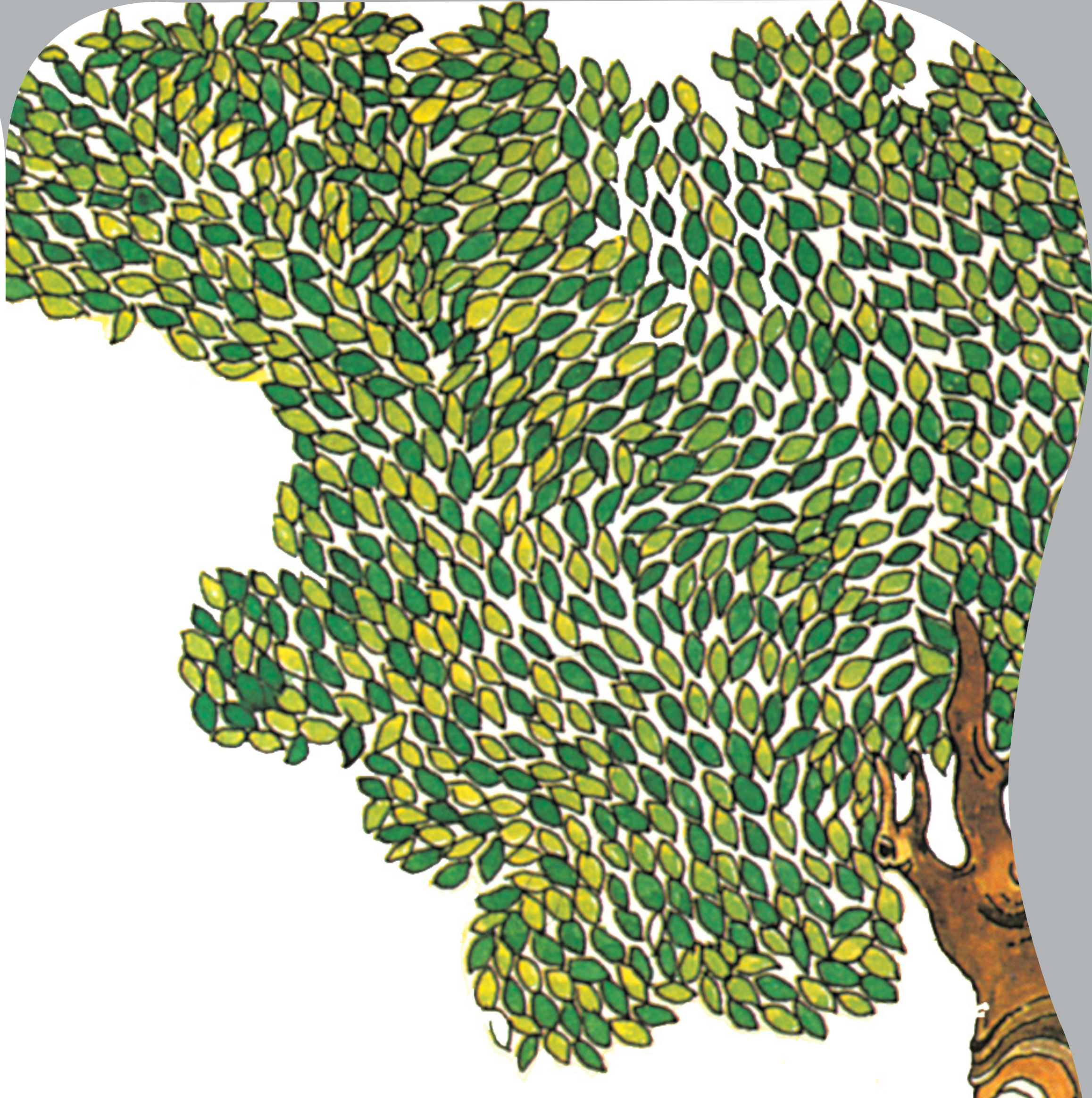

“अरे! तुम वही रानी हो न, जो मुझे पानी देती है?” नीम ने पूछा। “मैं तुम्हारी मदद ज़रूर करूँगा।”

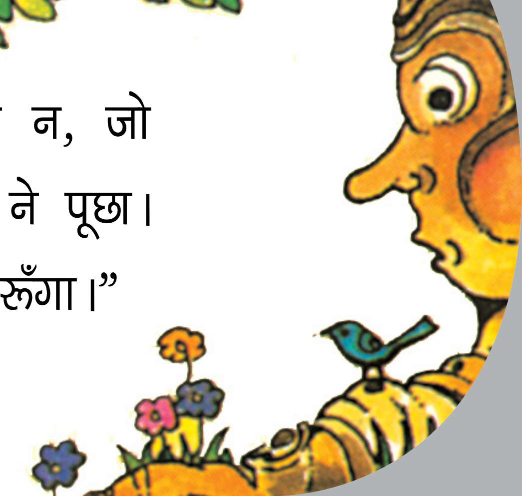

फिर रानी ने पहाड़ की चोटी पर बैठे बादल को बुलाया।

बादल बोला, “मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मेरी बहन सूरज, उसे ढूँढने में हमारी मदद करेगी।”

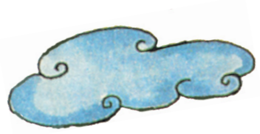

सूरज ने जब रानी की कहानी सुनी तो उसे बहुत क्रोध आया, “जो भी बच्चों को स्कूल जाने से रोकता है, वह बहुत बुरा है। चलो उसे ढूँढ़ते हैं।”

घूमते–घूमते अँधेरा होने लगा। सूरज को पृथ्वी की दूसरी तरफ़ काम पर जाना था।

तभी चाँद वहाँ इठलाता हुआ आ गया, “मैं भी तुम्हारी मदद करूँगा”, चाँद ने कहा।

“सब बच्चों के पास रहने के लिए घर होना चाहिए, और उन्हें खाना मिलना भी आवश्यक है।

बड़ी हवा के पास न तो घर है, और न ही खाना!”

“पर है वह बहुत अच्छी!” तारों ने रानी को घेरते हुए कहा। “घबराओ नहीं। हम उसे ढूँढ निकालेंगे।”

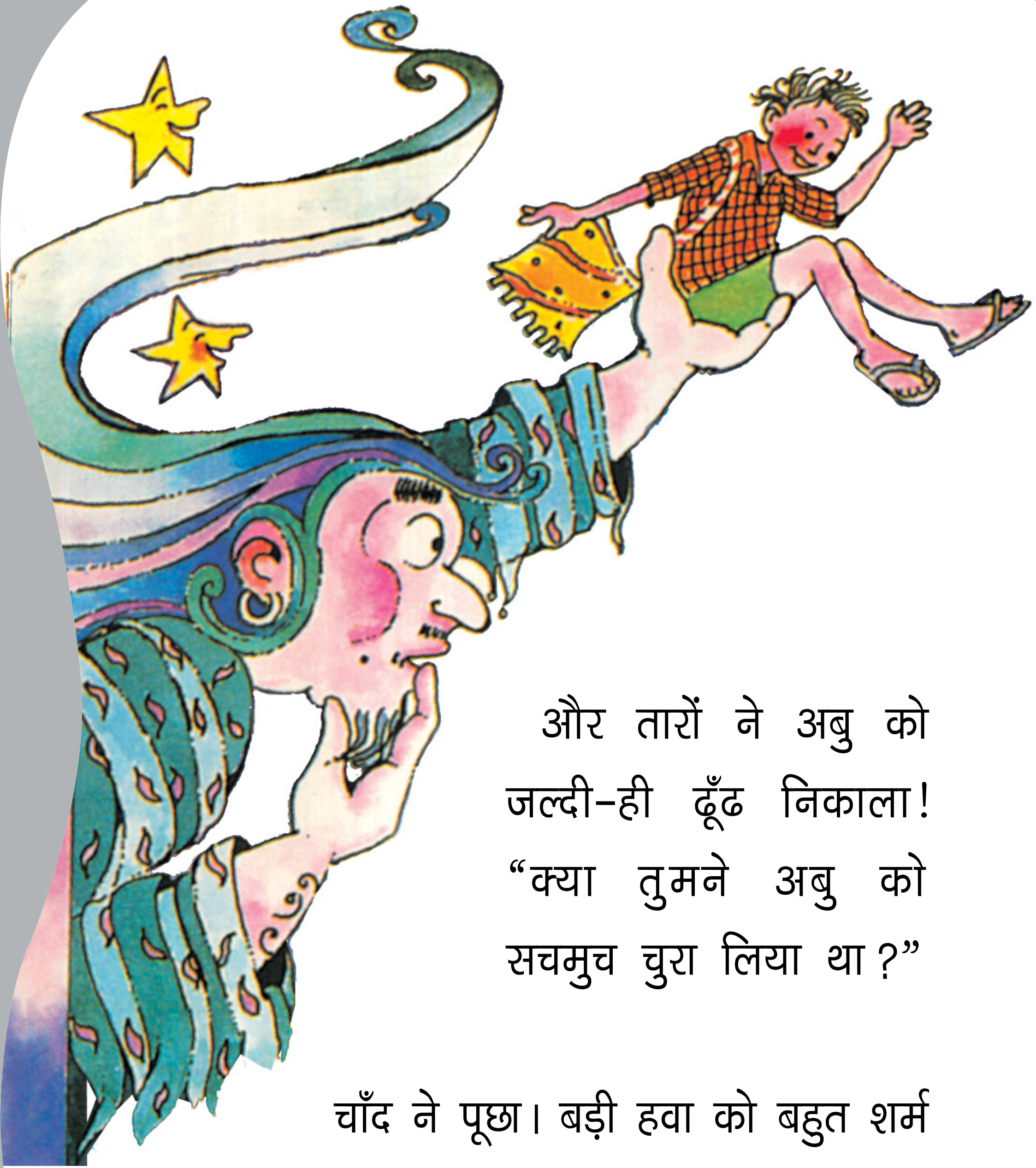

और तारों ने अबु को जल्दी–ही ढूँढ निकाला! “क्या तुमने अबु को सचमुच चुरा लिया था?”

चाँद ने पूछा। बड़ी हवा को बहुत शर्म आ रही थी।

“तुम्हीं ने तो कहा था कि सब बच्चों को अपने देश के बारे में जानकारी होनी चाहिए और उन्हें अपने देश से प्यार होना चाहिए।

इसलिए मैं अबु को भारत देश दिखाने ले गई थी,” उसने कहा।

“और मैंने बहुत कुछ सीखा!” अबु ने बताया।

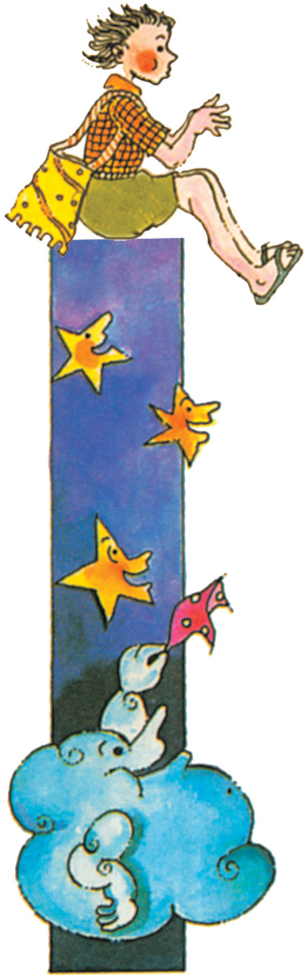

“मुझे आशा है कि तुमने जो कुछ भी सीखा, वह तुम्हें याद रहेगा,” चाँद ने कहा।

“बिल्कुल!” अबु गर्व से बोला। “घर पहुँचते ही मैं अम्मी और अब्बा से कहूँगा कि, रानी को भी स्कूल भेजें।”

“अबु, मेरे प्यारे भाई!” रानी दौड़कर अबु से लिपट गई।

अबु आगे बोला, "लंगड़ी मुनिया को तुम जानती हो ना? वह कितने सुंदर बरतन बनाती है। हम उसके बरतन शुक्रवार की हाट में बेचने में उसकी मदद करेंगे!"

"हाँ" रानी हँसकर बोली, "और वह जो नया लड़का हमारे गाँव में आया है, हमें उससे दोस्ती करनी चाहिए।"

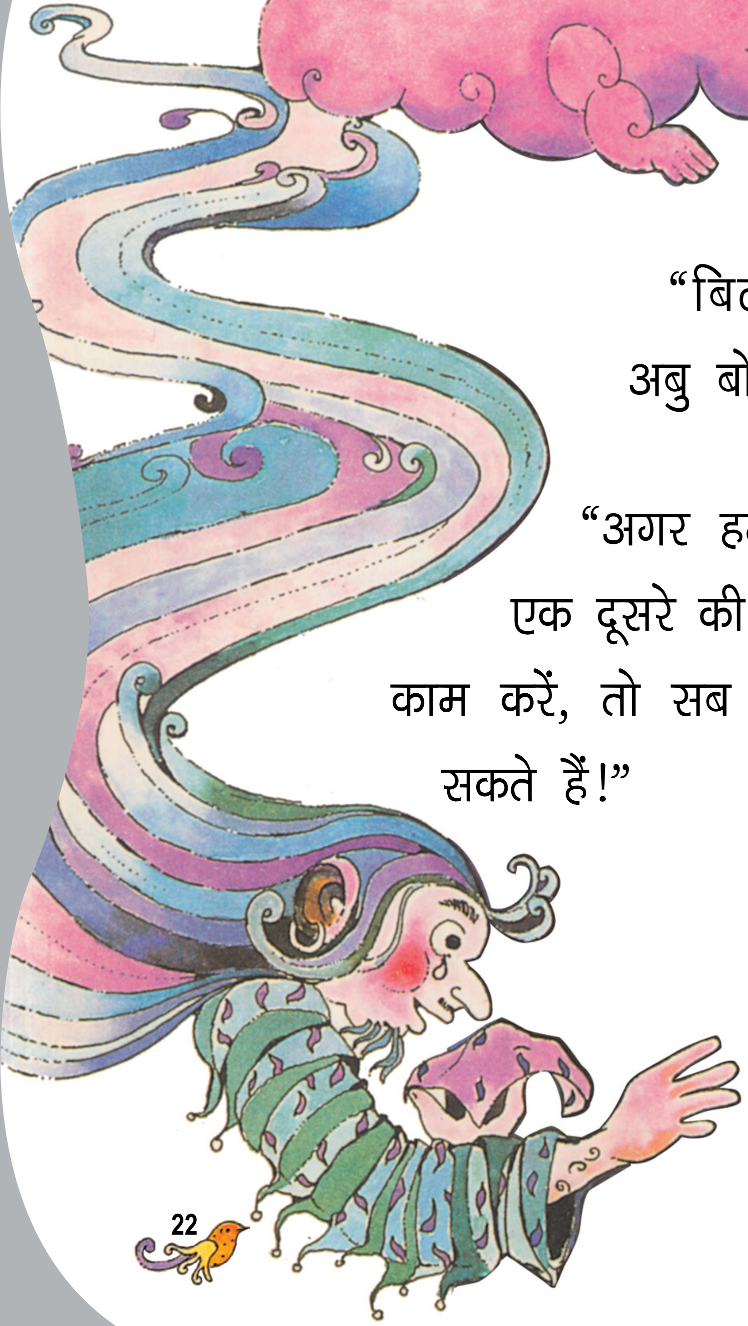

“बिल्कुल ठीक!”
अबु बोला,

“अगर हम मिलजुलकर
एक दूसरे की खुशी के लिए
काम करें, तो सब बच्चे खुश रह
सकते हैं!”

आकाशवासी मुस्काए।

“धन्यवाद बड़ी हवा, हमें
सही राह दिखाने के लिए!”
अबु शरमा कर बोला।

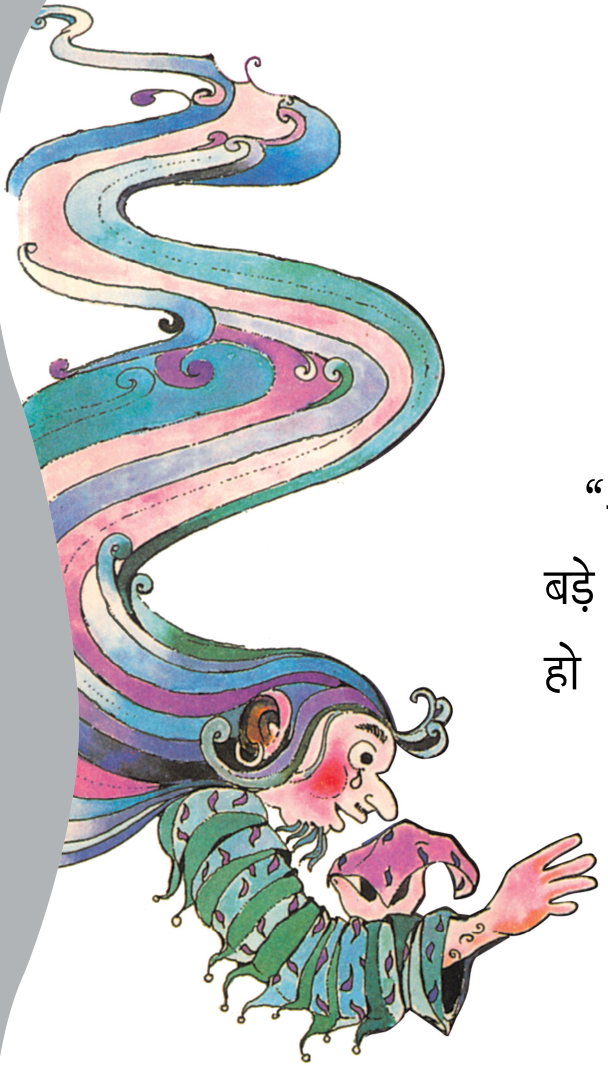

"शुक्रिया! पर कभी–कभी बड़े लोगों से भी ग़ल्तियाँ हो जाती हैं, है ना?"

भारी आवाज़ में हवा बोली। "पर मेरे कारण तुम लोग डर गए, इस बात का मुझे खेद है!"

अबु और रानी ज़ोर से बड़ी हवा से लिपट गए।

बेचारी बड़ी हवा को पूरे तीन दिन लगे फिर से उड़ान भरने में!

थोड़ी जानकारी, थोड़ा मज़ा!

अबु ने भारत की सैर की और जाना अपने देश के बारे में। अब तुम पहचानो भारत के इन राज्यों को –

1. सबसे अधिक जनसंख्या मेरी,
   ताज मेरी शान!

2. बर्फ से ढका आँचल मेरा,
   बूझो क्या है मेरा नाम ?

3. भारत की मैं राजधानी, दिलवालों का
   मैं घर ...

4. अरब सागर को छूती मेरी सीमाएँ, सब
   कहते मुझे “नारियल का देश”

5. हरे भरे खेत मेरे, पाँच नदियों का राज्य
   हूँ मैं ...

6. सुनहरा रेगिस्तान हूँ मैं, रेतीली धरती
   मेरी।

उत्तर: 1. उत्तर प्रदेश 2. हिमाचल प्रदेश 3. दिल्ली 4. केरल 5. पंजाब 6. राजस्थान

अपने देश के बारे में और जानने के लिए, तुम यहाँ के वन्यजीवों, खेती-बाड़ी, खानपान और त्योहारों की जानकारी भी इकट्ठी कर सकते हो।

यहाँ पहचानो इन अलग-अलग वेशभूषाओं को।

सा —

घा — —

चित्राँकनः अतनु रॉय

कु —

स — —

क — —

धो —

लुं —

ये शब्द अब हैं दोस्त हमारे

जानकारी
दौड़कर
क्रोध
बरतन
शुक्रवार
दोस्ती
शुक्रिया

ग़ल्तियाँ
आवाज़
लिपट
बेचारी
उड़ान

भारत के दक्षिणी राज्य तमिल नाडु में पैदा हुई 'kkUrh Ñ".kLokeh को नन्हे–मुन्नों के लिए लिखना बेहद अच्छा लगता है और उनका कहना है कि उन्हें लिखने की प्रेरणा अपने आस–पास की दुनिया से ही मिलती है। शान्ती अपनी पालतु बिल्ली के साथ चेन्नई में रहती हैं।

बच्चों की किताबों की जानी–मानी लेखिका एवं चित्रकार, onuk fc"V को दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट से डिग्री प्राप्त है और इनकी विशेषज्ञता इलस्ट्रेशन में है। इन्होंने बच्चों के लिए कई किताबों का चित्रांकन किया है और इन्हें नोमा कान्कूर्स और कथा अवॉर्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है।

सीरीज संपादिका: गीता धर्मराजन

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

मेरी अगली कहानी

अगड़म, बगड़म, तिगड़म हम
झट-पट सीखें अक्षर हम।
200 दोस्त बनें कम से कम
तिगड़म अगड़म बगड़म हम!

KATHA

यह कहानी “तमाशा” में सन् 1991 में प्रकाशित हो चुकी है
दूसरा संस्करण 2007, तीसरा संस्करण 2009, चौथा संस्करण 2010,
पाँचवाँ संस्करण 2010, छठवाँ संस्करण 2013
कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
एजियन ऑफ्सेट, नोएडा (उत्तर प्रदेश) द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89020-93-4
संपादकीय टीम: वैशाली माथुर, युक्ति बैनर्जी

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलने वाली खुशी को बढ़ावा देना। कथा स्कूल दिल्ली के बस्ती, मोहल्लों और अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में स्थित है।
ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाष: 4141 6600, 4182 9998, फैक्स: 2651 4373
ई मेल: ilr@katha.org, इंटरनेट: http://www.katha.org
प्रोडक्शन टीम: प्रकाश आचार्य, यशपाल बिष्ट, विक्रम कुमार

जैसे बूँद-बूँद से गहरे सागर, रेत के
कणों से फैले हुए रेगिस्तान बनते हैं,
वैसे ही नन्हें बच्चों की सूझ-बूझ से बनती हैं
मनोरंजक कहानियाँ। चलो ले चलते हैं तुम्हें
अबु, नूतन, कोकिला, जिश्नू ... से मिलाने।
क्या है इनमें कोई तुम्हारे जैसा ...?

for young learners
ISBN 978-81-89020-93-4
a katha book
www.katha.org
Rs 48